Toppersnotes
Unleash the topper in you

2nd – ग्रेड

वरिष्ठ अध्यापक

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

प्रथम – प्रश्न पत्र

भाग – 2

सामान्य अध्ययन (राजस्थान)

SIERRA INNOVATIONS

RPSC 2ND GRADE – 2021

सामान्य अध्ययन (राजस्थान)

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	राजस्थान में चौहान वंश	1
2.	राजस्थान एवं मुगल साम्राज्य	8
3.	राजस्थान में 1857 की क्रांति	16
4.	राजस्थान में किसान आंदोलन	21
5.	राजस्थान में राजनीतिक जनजागरण	29
6.	राजस्थान के स्वतंत्रता सेनानी	33
7.	राजस्थान का एकीकरण	42
8.	राजस्थान में प्रजामण्डल	47
9.	राजस्थान में मध्यकाल व आधुनिक काल में नारियों की भूमिका	53
10.	राजस्थान के लोक देवता	60
11.	राजस्थान की लोक देवियाँ	74
12.	राजस्थान के लोक संत	80
13.	राजस्थान के प्रमुख सम्प्रदाय	86
14.	राजस्थान के त्योहार	88
15.	राजस्थान की सामाजिक प्रथाएँ एवं रीति-रिवाज	100
16.	आभूषण, वेशभूषा व खान-पान	103
17.	राजस्थान के प्रमुख लोकगीत	107
18.	राजस्थान की लोक गायन शैलियाँ	109
19.	राजस्थान के संगीत घराने	110
20.	राजस्थान के लोक नृत्य	112
21.	राजस्थान के लोक नाट्य	119
22.	राजस्थान की चित्रकला	124

23.	राजस्थान की हस्तकला एवं लोक कलाएँ	134
24.	राजस्थान का साहित्य	149
25.	राजस्थान की प्रमुख बालियाँ	156
26.	राजस्थान में प्रमुख साहित्य, कला एवं संगीत संस्थान	158
27.	स्थानीय स्वशासन (पंचायती राज व नगरीय शासन व्यवस्था)	161
28.	राज्यपाल	167
29.	मुख्यमंत्री	171
30.	राज्य मंत्रीपरिषद्	173
31.	मुख्य सचिव	175
32.	राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)	179
33.	राजस्थान राज्य मानवाधिकार आयोग	182

3- 1857 की क्रांति (राजस्थान)

- लार्ड वेलेजली ने 1798 ई. में सहायक संधि प्रथा चलाई इसके तहत संधि करने वाली भारत की प्रथम रियासत हैदराबाद (निजाम अली 1798)।
- राजस्थान की प्रथम रियासत भरतपुर (1803 रणजीत सिंह)
- गवर्नर जनरल लार्ड हेस्टिगेस ने 1917 में अधीनस्थ पृथक्करण की नीति का प्रचलन किया।
- जिसके तहत संधि करने वाली रियासते निम्नलिखित है –
  - करौली–टोंक–कोटा–मारवाड–मेवाड़–बूंदी–बीकानेर–जयपुर–किशनगढ–डुंगरपुर–जैस लमेर–सिरोही
  - करौली – हरवक्ष पालसिंह 1817
  - सिरोही – शिवसिंह 1823
  - जैसलमेर – मलराज II 1819 में
  - जयुपर – जगत सिंह I
  - जोधपुर – मानसिंह
  - उदयपुर – भीमसिंह
  - बीकानेर – सूरत सिंह
  - टोंक – अमीर खाँ
- इस क्रांति से पूर्व 1832 में विलियम बैटिंग ने AGG के पद का सृजन किया। प्रथम AGG मि. लॉकेट को बनाया गया जिसका मुख्यालय अजमेर था।
- 1845 ई. में ग्रीष्म कालीन केन्द्र माउण्ट आबू को बनाया गया।
- क्रांति से पहले 6 प्रमुख छावनियाँ थी
  एरिनपुरा (पाली), खेंरवाड़ा (उदयपुर – भील सेना का मुख्यालय), नसीराबाद, ब्यावर (अजमेर), देवली (टोंक – गंगा सिंह की सैनिक शिक्षा), नीमच (मध्य प्रदेश),
- ब्यावर व खेरवाड़ा सैनिक छावनियों ने क्रांति में भाग नहीं लिया।
- इस क्रांति के समय राज के विभिन्न रियासतों में नियुक्त पॉलिटिकल एजेंट
  - जयपुर – ईडन
  - जोधपुर – मेक मोसन
  - उदयपुर – शावर्स (तात्य टोपे की फांसी का विरोध किया)
  - सिरोही – J.D. हॉल
  - कोटा – बर्टन
  - भरतपुर – मोरिसन
- मेराठ में हुई क्रांति की सूचना राजस्थान के AGG को 18 मई, 1857 को माउण्ट आबू में प्राप्त हुई।

प्रमुल स्थल

नसीराबाद – 28 मई, 1857

- यहाँ क्रांतिकारियों का नेतृत्व बख्तावर सिंह ने किया था।
- क्रांति प्रारम्भ करने वाली सैनिक टुकड़िया।
- 15 वीं व 30 वीं बंगाल नेटिव इन्फेन्टट्री
- छावनी का तत्कालीन अंग्रेज अधिकारी प्रिचार्ड
- बख्तावर सिंह ने प्रिचाई से कहा था कि ''हमारे साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया जा रहा है, क्या हम विद्रोही है।''
- इस छावनी में क्रांतिकारियों ने 2 अग्रेंज अधिकारियों की हत्या की – स्पोटिश वुड और न्यूबरी
- नसीराबाद छावनी के क्रांतिकारी भरतपुर रियासत से होते हुए दिल्ली पहुँचे अंत भरतपुर में क्रांति हुई।

भरतपुर – 3 मई, 1857

- राजा – जसवंत सिंह
- संरक्षक – मोरिसन
- गुर्जर व मेव जाति द्वारा क्रांति की गई।
- क्रातिकारियों के भय से मोरिसन ने आगरा दुर्ग में शरण ली।

नीमच – 03 जून, 1857

- नेतृत्व कर्ता – मोहम्मद अली बेग व हिरा सिंह।
- अधिकारी – कर्नल एबॉट
- इस छावनी में आटे में हड्डी का चूरा मिले होने की अफवाह फैली थी। इस अफवाह को शांत करने में मेवाड़ के सैनिक अधिकारी अर्जुन सिंह ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
- इस छावनी से भागे अंग्रेजो ने डूंगला गाँव में रूघाराम किसान के घर शरण ली। महाराणा स्वरूप सिंह ने इन अंग्रेजो को पिछोला झील के जग मंदिर में ठहराया।
- क्रांतिकारी टोंक रियासत से होते हुए दिल्ली पहुँचे।
- इस छावनी में भारतीय सैनिको को स्वामीभक्ति की शपथ दिलाई जिसका विरोध करते हुए मोहम्मद अली बेंग ने कहा था कि ''जब अंग्रेजो ने अपनी शपथ का पालन नहीं किया तो हम भी ऐसा करने के लिए बाध्य नहीं है।''

टोंक में क्रांति – 10 जून 1857

- तत्कालीन नवाब वजीरूदौला। वजीर अली
- नवाब ने अंग्रेजो का साथ दिया अतः इसे ईसाई राजा भी कहा गया।
- देवली मे क्रांति 4 जून को हुई।
- टोंक की प्रजा ने क्रांतिकारियों का साथ दिया।
- इस रियासत में सर्वप्रथम देवली सैनिक छावनी में क्रांति प्रारम्भ हुई जो बाद में सम्पूर्ण रियासत में फैली गई थी।
- रियासती सैनिको का नेतृत्व नारिस मोहम्मद ने किया था।
- नासिर मोहम्मद की अप्रत्यक्ष रूप से सहायता तात्या टोपे द्वारा की गई।
- टोंक रियासत से 600 मुजाहिद्दीन जफर की सहायता हेतु दिल्ली पहुँचे
- महिलाओं द्वारा भी इस रियासत में क्रांति में भाग लेने का उल्लेख मिलता है।

अलवर रियासत में क्रांति – 11 जुलाई, 1857

- शासक बन्ने सिंह ने अंग्रेजो का साथ दिया तथा क्रांति दमन करने में सहयोग किया।

अजमेर में – 9 अगस्त, 1857

- यहाँ क्रांतिकारियों ने कारागार पर आक्रमण करके 50 से अधिक साथियों को मुक्त करवाया।
- कर्नल डिक्सन ने मेर रेजीमेंट को ब्यावर से अजमेर भेजा तथा जोधपुर महाराजा तख्तसिंह ने कुशल सिंह सिंधवी के नेतृत्व में अजमेर भेजा व क्रांति का दमन कर दिया।

एरिनपुरा में क्रांति – 21 अगस्त, 1857

- नेतृत्व कर्ता – शीतल प्रसाद, मोती खाँ, तिलक राम
- ठाकुर शिवनाथ सिंह ने इन क्रांतिकारियों का साथ दिया।
- क्रांतिकारियों ने AGG के पुत्र एलेक्जेण्डर की हत्या कर दी थी।
- यहाँ के क्रांतिकारियों ने नारा दिया ''चलो दिल्ली मारो फिरंगी''।
- इन क्रांतिकारियों को अंग्रेज अधिकारी गराड के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना ने पराजित किया। नारनौल के युद्ध में।

आउवा में क्रांति – सितम्बर 1857

- ठाकुर कुशाल सिंह चम्पावत थे।
- कुशाल सिंह और तख्त सिंह के बीच विवाद का मुख्य कारण तख्त सिंह द्वारा रेख में वृद्धि करना था।
- कुशाल सिंह के साथ क्रांतिकारियों ने अंग्रेजो और जोधपुर की राजकीय सेना को निम्नलिखित से युद्धो से पराजित किया।

बिथोड़ा का युद्ध – 8 सितम्बर, 1857

- हीथकोट ने अंग्रेजी सेना व ओनार सिंह जोधपुर सेना का नेतृत्व किया, जिसमें कुशाल सिंह विजय रहा।
- ओनार सिंह व हीथकोट मारे गये।

चेलावास का युद्ध – 18 सितम्बर, 1857

- काले व गौरों का युद्ध
- क्रांतिकारियों के विरूद्ध अंग्रेजी सेना का नेतृत्व ए.जी.जी. पैट्रिक लॉरेन्स द्वारा तथा जोधपुर की राजकीय सेना का नेतृत्व मारवाड़ के पॉलिटिकल एजेन्ट मैक मैसन द्वारा किया गया।
- मैक मैसन का सिर काटकर आऊवा किले के मुख्य द्वार पर लटका दिया गया।
- अंग्रेज अधिकारी होम्स के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना ने आऊवा के किले पर अधिकार किया। इस समय किले की रक्षा का भार लाम्बिया के ठाकुर पृथ्वीसिंह के पास था।
- कुशाल सिंह ने कोठारिया के ठाकुर जोधसिंह व सलुम्बर के ठाकुर केसरी सिंह के पास शरण ली।
- कुशाल सिंह ने नीमच सैनिक छावनी में आत्मसम्पर्ण किया।
- इनके अपराधों की जाँच हेतु टेलर कमीशन बैठाया गया, जिसमें अपनी रिपोर्ट में कुशाल सिंह को अपराध मुक्त घोषित किया।
- 1864 में इसकी मृत्यु हो गयी।
- कुशाल सिंह का साथ देने वाले प्रमुख जागीरदार
  1. आसोप – शिवनाथ सिंह जागीरदार
  2. कोठारियाँ – जोधसिंह
  3. आलनियाँ – अजित सिंह
  4. सल्लुम्बर – केशरी सिंह
  5. घूलर – बिशन सिंह
  6. लाम्बिया – पृथ्वी सिंह
- आऊवा के क्रांतिकारियों की प्रेरणा श्रोत – कुल देवी सुगाली माता तथा कामेश्वर महादेव मंदिर को माना जाता है।

- होम्स द्वारा शुगाली माता की मूर्ति आऊवा से अजमेर ले जायी गई जो वर्तमान में पाली के बांगड संग्राहलय में सुरक्षित है।
- इस मुर्ति के 10 सिंह व 54 हाथ बने है।

कोटा में क्रांति – 15 अक्टूबर, 1857

- शासक – रामसिंह ।
- नेतृत्व कर्त्ता – जयदयाल और मेहराब खाँ
- ये दोनों कोटा की सेना में रिसालदार के पद पर कार्यरत थे।
- क्रांति करने वाली सैनिक टुकड़ियाँ – नारायणी पलटन व भवानी पलटन
- क्रांतिकारियों ने कोटा के राजा रामसिंह II को नजरबंद किया तथा कोटा नगर में समांतर सरकार चलाई।
- सर्वाधिक व्यवस्थित और लम्बे समय तक चलने वाली क्रांति कोटा की है।
- क्रांतिकारियों द्वारा यहाँ के पॉलिटिकल एजेंट मेजर बर्टन का सिर काटकर कोटा की गलियों में घुमाया गया तथा बर्टन के दो पुत्रों फ्रेंक व ऑर्थर और डॉ सेड्लर व कोट्म की हत्या कर दी गई।
- रामसिंह II ने जनानी ड्योढ़ी की रक्षा हेतु मेवाड़ के महाराणा स्वरूप सिंह को पत्र लिया था।
- अंग्रेज अधिकारी रॉबर्ट्स ने करौली महाराजा मदनपाल सिंह की सहायता से कोटा पर पुनः अधिकार किया।
- अंग्रेजो ने रामसिंह II के सम्मान में दी जाने वाली तोपों की सलामी की संख्या घटाकर 13 कर दी तथा मदन पाल सिंह बढाकर 13 से 17 कर दी।

धौलपुर में क्रांति – 27 अक्टूबर, 1857

- शासक – भगवन्त सिंह
- नेतृत्व – रामचन्द्र व गुर्जर देवा
- धौलपुर रियासत में ग्वालियर से आये क्रांतिकारियों ने क्रांति को प्रारंभ किया तथा पंजाब के पटियाला से आई सेना द्वारा क्रांति का दमन किया गया।
- क्रांतिकारी व दमनकारी दोनों बाहरी लोग थे।

1) जयपुर – रामसिंह II

जयपुर के राजा व प्रजा दोनों ने अंग्रेजो का साथ दिया। अतः अंग्रेजो ने रामसिंह II को ''सितार–ए–हिंद'' की उपाधि दी। कोटपूतली की जागीर प्रदान की।

2) बीकानेर – सरदार सिंह

सरदार सिंह ने राजपूताना से बाहर जाकर क्रांति का दमन करने में अंग्रेजो का साथ दिया। अतः अंग्रेजो ने सरदार सिंह को टिब्बी परगने के 41 गाँव भेंट दिये।

3) जैसलमेर – रणजीत सिंह

अंग्रेजो का साथ दिया अतः अंग्रेजो ने रणजीत सिंह को 2000 की खिलअत (भेंट) प्रदान की।

4) अमर चन्द बाठिया

ये मूलतः बीकानेर के निवासी थे। ग्वालियर में व्यापार करते थे इन्हे ग्वालीयर का नगर सेठ और कोषाध्यक्ष का समान प्राप्त हुआ। 1857 की क्रांति के समय अमरचंद बाठिया ने रानी लक्ष्मी बाई की आर्थिक सहायता

की थी। अतः इनको ग्वालियर में सर्राफा बाजार में फांसी दे दी, 22 जून, 1857। इन्हें राजस्थान का प्रथम शहीद और मंगल पाण्डे भी कहा जाता है। लक्ष्मी बाई की आर्थिक सहायता करने के कारण इस क्रांति का भामाशाह भी कहा गया।

5) ताँत्या टोपे

मूल नाम – रामचन्द्र पाण्डूरंग, ग्वालियर के सामन्त थे।

इस क्रांति में लक्ष्मीबाई और नाना साहब की सहायता की थी। क्रांति के दौरान ताँत्या टोपे ने दो बार प्रवेश किया। प्रथम बार भीलवाड़ा मार्ग से 8/9 अगस्त, 1857 को प्रवेश किया। परन्तु कुआड़ा के युद्ध में होम्स की सेना से पराजित हुआ। दूसरी बार बाँसवाड़ा मार्ग से 11 दिसम्बर, 1857 को प्रवेश किया। बाँसवाड़ा के शासक लक्ष्मण सिंह को पराजित कर बाँसवाड़ा पर अधिकार किया तथा कुछ समय तक बासवाड़ा का शासन संचालन किया। जैसलमेर रियासत को छोडकर ताँत्या टोपे सहायता प्राप्त करने के लिए राजस्थान की प्रत्येक रियासत में गया था। जनवरी, 1859 में सीकर के युद्ध में ताँत्या टोपे हॉम्स की सेना पराजित हुआ। सीकर के ठाकुर राव राजा भैरव सिंह ने तात्या को रोकने का प्रयास किया। नरवर के सामंत व ताँत्या के मित्र मानसिंह नरूका के विश्वासघात के कारण 7 अप्रैल, 1859 को ताँत्या को बंदी बना लिया गया। 18 अप्रैल, 1859 को शिवपुरी नामक स्थान पर क्षिप्रा नदी के तट पर तात्या को फांसी दे दी गई। मेवाड़ के पॉलिटिकल एजेन्ट शावर्स ने इस फांसी का विरोध करते हुए कहा की ''ताँत्या ब्रिटिश भारत का निवासी नहीं था। अतः इसे फांसी देना गलत था। आने वाली पीढ़ियाँ पूछेंगी कि इस फांसी के लिए किसने स्वीकृति दी और किसने इसकी पुष्टी की''।

6) डूँगजी व जवाहर जी

ये सीकर ठिकाने में बठोठ परोदा के निवासी थे। शेखावटी रेजिमेंट में रिसालदार के पद पर कार्यरत थे। झुंझुनूं इन्होने 1847 में ई. में नसीराबाद सैनिक छावनी को लुटा था। अंग्रेजों ने डूंगजी को बंदी बनाकर आगरा दुर्ग में रखा था। जवाहर जी ने लोटीया जाट, करणीय मीणा, सांवत नाई आदि की सहायता से डूँगजी को मुक्त करवाया। बीकानेर रियासत ने जवाहर जी को संरक्षण दिया था।

7) रामसिंह II बूंदी के महाराजा

इन्होने अप्रत्यक्ष रूप से ताँत्या टोपे की सहायता की। इनका दरबारी साहित्यकार सूर्यमल्ल मिश्रण था। प्रमुख रचनाएँ वंश भास्कर व वीर सतसई। सूर्यमल्ल मिश्रण ने क्रांति के दौरान हाथी पर बैठकर युद्ध भूमि में क्रांतिकारियों का उत्साह वर्धन किया था। क्रांति के दौरान अंग्रेजो ने बाबोसर गढ (सीकर) को बारूद से उड़ा दिया।

4- राजस्थान मे किसान आंदोलन

राजस्थान मे किसान आंदोलन का मुख्य कारण अत्यधिक कर व लागबाग होना था।

बिजौलिया किसान आंदोलन 1897 से 1941 [2nd Grade 1st Paper - 2018]

- **प्राचीन नाम** – विजयावल्ली था जिसका उल्लेख बिजौलिया शिलालेख में मिलता है।
- बिजौलिया ठिकाने का संस्थापक अशोक परमार को माना जाता है।
- खानवा युद्ध के बाद महाराणा सांगा द्वारा यह ठिकाना अशोक परमार को दिया गया।
- बिजौलिया से भैसरोडगढ तक के क्षेत्र को उपरमाल क्षेत्र कहा जाता है। जहाँ धाकड जाति के किसानों की बहुलता है।
- इस आंदोलन का मुख्य कारण अत्यधिक कर व लाग बाग को माना जाता है।
- जो कुल 84 प्रकार के थे। यह आंदोलन भारत का प्रथम अहिंसक किसान आंदोलन तथा राजस्थान का सर्वाधिक लम्बे समय तक चलने वाला माना जाता।
- यह आंदोलन तीन चरणो में सम्पन्न हुआ।
  प्रथम चरण 1897 से 1916 – साधु सीताराम दास **[2nd Grade 1st Paper - 2013]**
  दूसरा चरण 1916 से 1927 – विजय सिंह पथिक
  तीसरा चरण 1927 से 1941 – सेठ जमनालाल बजाज

प्रथम चरण

- इस चरण में बिजौलिया के ठाकुर कृष्ण सिंह ने भूमि कर में 1.5 गुणा वृद्धि की जिसका किसानों ने विरोध किया।
- 1897 में गिरधारी पुरा गाँव में किसानों की बैठक हुई। गंगाराम धाकड़ के मृत्यु भोज पर जिसका नेतृत्व साधु सीताराम दास ने किया।
- किसानों द्वारा नान जी पटेल और ठाकरी पटेल को ठाकुर कृष्ण की शिकायत को लेकर महाराणा फतेहसिंह के पास भेजा गया।
- महाराणा द्वारा बिजौलिया की जाँच हेतु हामिद हुसैन को बिजौलिया भेजा गया जिसने अपनी रिपोर्ट किसानों के पक्ष में प्रस्तुत की।
- कृष्ण सिंह ने 1903 में चवरी कर/न्योत/विवाह कर लगाया जो प्रति विवाह 5 रू था।
- 1906 में पृथ्वी सिंह बिजौलिया का ठाकुर बना। इसने किसानों पर तलवार बंधाई कर/उत्तराधिकार शुल्क लगाया।
- 1914 में केशरी सिंह बिजौलिया का ठाकुर बना। महाराणा ने अमरसिंह राणावत को इसका संरक्षक बनाया।
- अमरसिंह द्वारा भूमि कर घटाकर 1/3 कर दिया गया।
- केशरी सिंह के समय ही बिजौलिया के किसानों से युद्ध कर वसूला गया।

द्वितीय चरण

- 1916 से 1927 विजयसिंह पथिक **[2nd Grade 1st Paper - 2018]**
- इनका मूल नाम भूपसिंह था।
- उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले के गुढावली गाँव में गुर्जर परिवार से संबंधित थे। अजमेर की टोडगढ जेल से मुक्त होने के बाद इन्होंने विजय सिंह पथिक नाम रखा।
- पथिक द्वारा 1917 में उपरमाल पंच बोर्ड की स्थापना की गई।
- इसमें कुल 13 सदस्य थे। इसका अध्यक्ष मन्नालाल पटेल को बनाया गया।
- पथिक द्वारा उपरमाल डंका समाचार पत्र का प्रकाशन किया गया।
- पथिक के आग्रह पर गणेश शंकर विधार्थी ने कानपुर से स्वयं द्वारा प्रकाशित प्रताप समाचार पत्र में इस आंदोलन का उल्लेख किया। **[2nd Grade 1st Paper - 2016]**
- इसी पत्र द्वारा बिजौलिया आंदोलन को राष्ट्रीय स्तर पर प्रचारित किया गया।
- पथिक द्वारा लिखा गया "झंडा नीचे नही झुकाना प्राण भले गंवाना"।

- माणिक्य लाल वर्मा द्वारा भी "पंछीडा" नामक गीत की रचना की गई।
- माणिक्य लाल वर्मा के साथ मिलकर पथिक ने शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की।
- 1919 में महाराणा फतेहसिंह द्वारा बिन्दूलाल भट्टाचार्य के नेतृत्व में तीन सदस्य समिति का गठन किया गया और इसे बिजौलिया भेजा गया।
- इसने अपनी रिपार्ट किसानों के पक्ष में प्रस्तुत की।
- इस समिति के अन्य सदस्य ठाकुर अमरसिंह व अफजल अली थे।
- 1920 में महाराणा द्वारा दूसरी समिति का गठन किया गया जिसके सदस्य रमाकान्त मालवीय ठा., राजसिंह व तख्तसिंह थे।
- इस समिति ने उदयपुर में किसानों के प्रतिनिधि मण्डल से भेंट की इस मण्डल में माणिक्यलाल वर्मा सहित 8 सदस्य थे।
- 1922 में A.G.G रॉबर्ट हॉलैण्ड ने 84 में से 35 लगान समाप्त करने की घोषणा की, परन्तु उसे लागू नही किया गया।
- 10 सितम्बर, 1923 को पथिक को कुंभलगढ दुर्ग मे बंदी बना लिया गया। ये 1927 में मुक्त हुए इस दौरान बारानी भूमि पर कर बढ़ा दिया गया।

तीसरा चरण

- 1927–1941, जमनालाल बजाज।
- इन्होनें हरिभाऊ उपाध्याय को अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया।
- इस चरण में माणिक्य लाल वर्मा सर्वाधिक सक्रिय थे।
- वर्मा जी ने अंग्रेज अधिकारी विल्किन्सन तथा मेवाड अधिकारी सर टी. विजय राघवाचार्य के सहयोग से हॉलैण्ड की घोषणा को लागू करवाया। अतः आंदोलन समाप्त हुआ।
- गाँधी जी इस आंदोलन की जाँच हेतु अपने निजी सचिव महादेव देसाई को भेजा था।
- प्रेमचन्द ने अपने उपन्यास "रंगभूमि" में जिस किसान आंदोलन का उल्लेख किया है उसकी रूप रेखा बिजौलिया आंदोलन से प्रेरित है।

बेंगू किसान आंदोलन (1921–1923) चित्तौडगढ

- आंदोलन का मुख्य कारण – अत्यधिक कर व लाग बाग
- प्रारम्भिक केन्द्र – मेनाल (महादेव मंदिर) भीलवाडा
- नेतृत्व कर्ता – रामनारायण चौधरी
- तात्कालीन ठाकुर – अनूपसिंह
- सर्वाधिक सक्रिय संगठन – राजस्थान सेवा संघ
- राजस्थान सेवा संघ व अनूपसिंह के मध्य एक समझौता हुआ। जिसे महाराणा ने वॉल्शेविक संधि की संज्ञा दी।
- 1922 में ट्रेंच आयोग का गठन किया गया। इस आयोग ने 1923 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसमें सभी करों को जायज ठहराया।

गोविंदपुरा हत्याकांड (13 जुलाई, 1923)

- ट्रेंच अधिकारी द्वारा यह हत्याकाण्ड करवाया गया।
- इसमें रूपाजी धाकड, कृपाजी धाकड़ शहीद हुए।
- आंदोलन के अंतिम भाग में विजयसिंह पथिक ने नेतृत्व किया। अन्ततः 34 लाग बाग समाप्त कर दी गई। आंदोलन समाप्त हुआ।

अलवर किसान आंदोलन (1922–1925)

- राजा – जयसिंह/जयदेव सिंह
- जयसिंह द्वारा भूमिकर में वृद्धि कर दी गई।
- तात्कालिक कारण जंगली सूअरों को मारने पर प्रतिबंध लगाना।

नीमूचाणा हत्याकाण्ड (14 मई, 1925) [2nd Grade 1st Paper - 2016]

- किसानों की सभा पर कमाण्डर छाजू सिंह ने गोली चलाने का आदेश दिया। कुल 700 किसान शहीद हुए।
- गाँधी जी ने यंग इंडिया समाचार पत्र में इसे दोहरी डायरशाही कहा।
- रियासत समाचार पत्र में इस हत्याकाण्ड की तुलना जलियावाला बाग हत्याकाण्ड से की गई।
- अलवर महाराजा ने इस हत्याकाण्ड की जाँच हेतु जनरल छजूसिंह की अध्यक्षता में एक आयोग का गठन किया। अन्य सदस्य – रामचरण लाल, ठाकुर सुल्तानसिंह, सिविल जज
- राष्ट्रीय कार्यकर्त्ताओं द्वारा भी एक समिति का मणिलाल कोठारी की अध्यक्षता में गठित की जिसके सचिव रामनारायण चौधरी थे।

मेव किसान आंदोलन, 1932

- तात्कालीन कारण कुरान की शिक्षा पर रोक लगाना।
- नेतृत्वकर्त्ता – चौधरी यासीन खाँ, मोहम्मद खाँ
- इस आंदोलन के दौरान अंग्रेजों ने राजा जयसिंह को देश निकाला दिया तथा कुरान की शिक्षा पर रोक हटा दी गई।
- 1932 में राज्य सरकार ने रजिस्ट्रेशन ऑफ सोसायटी एक्ट पारित किया। जिसमें यह प्रावधान किया गया कि पूर्व में या बाद में स्थापित सभी संगठनों को इसके अन्तर्गत पंजीकृत करना होगा।
- मेवों ने इस अधिसूचना व अधिनियम का विरोध किया।
- 6 अक्टूबर, 1932 को ऑल इंडिया मुस्लिम कॉन्फ्रेंस का एक प्रतिनिधि मण्डल अपने अध्यक्ष डॉ. मुहम्मद इकबाल के नेतृत्व में भारत के वायसराय से शिमला में मुलाकात की व एक ज्ञापन पेश किया।

बूँदी किसान आंदोलन, (1922–27)

- कारण अत्यधिक कर व लागबाग
- नेतृत्व कर्त्ता – पण्डित नयनूराम शर्मा
- प्रारम्भिक केन्द्र – बरड।
- इस आंदोलन के समय राजस्थान सेवा संघ द्वारा पत्रक प्रकाशित किया गया।
- जिसका शीर्षक "बूँदी राज्य में स्त्रियो पर अत्याचार"।
- यह आंदोलन राजा व रियासत के विरूद्ध न होकर प्रशासन के विरूद्ध था।

डाबी हत्याकाण्ड (2 अप्रैल, 1923) [2nd Grade 1st Paper - 2016]

डाबी नामक स्थान पर पुलिस अधिकारी इकराम हुसैन द्वारा किसान सभा पर गोलीकाण्ड किया गया। जिसमें नानक भील व देवालाल गुर्जर शहीद हुए। इस समय में दोनों मंच से झण्डा गीत की प्रस्तुति दे रहे थे।

बीकानेर किसान आंदोलन (1927–1941)

- शासक – गंगा सिंह – दमन उत्पीडन निष्कासन की नीति अपनायी।
- गंगा सिंह द्वारा 1927 में गंगनहर का निर्माण करवाया गया। जो भारत की प्रथम सिंचाई परियोजना थी।
- 1929 में जागीरदारों द्वारा मिलकर जमीदारा एसोसिएशन का गठन किया गया। जिसके अध्यक्ष दरबारा सिंह थे।
- बीकानेर रियासत में महाजन ठिकाना प्रथम श्रेणी का ठिकाना माना जाता है।
- इस रियासत में सर्वाधिक अत्याचार, इसी ठिकाने में हुए।
- चन्दनमल बहड़ द्वारा किसानों का नेतृत्व किया गया परन्तु उन्हे बंदी बना लिया गया।
- इस रियासत में किसान आंदोलन का क्रूरता से दमन किया गया है।

दुधवा खारा किसान आंदोलन (1944–1948)

- ठाकुर सूरजमल
- **नेतृत्व** – चौधरी हनुमान सिंह
- **प्रमुख सहयोगी** – मधाराम वैध
- **प्रमुख कारण** – किसानों को जोत से बेदखल करना।
- **कांगड काण्ड – 1946** यहाँ किसानो की सभा पर अत्याचार हुआ। यहाँ महिलाओं का नेतृत्व खेतू बाई द्वारा किया गया। 1948 में बीकानेर में उत्तरदायी शासन की घोषणा के बाद यह आंदोलन समाप्त हुआ।

मारवाड किसान आंदोलन (1923–1947)

- 1918 में चाँदमल सुराणा द्वारा मरूधर हितकारिणी सभा की स्थापना की गई।
- इस रियासत में 1920 में तौल आंदोलन चलाया गया। जिसका कारण 100 तौला प्रति सेर से घटाकर 80 तौला करना था।
- 1922 में पुनः 100 तौला/सेर कर दिया गया । यह आंदोलन समाप्त हुआ।
- 1923 में मारवाड रियासत से मादा पशुओं के निष्कासन पर से रोक हटा ली गई। इसके विरोध में आंदोलन हुआ। अतः पुनः रोक लगा दी गई।
- 1931 में मारवाड में बिगोड़ी कर में वृद्धि कर दी गई।
- 1934 में पुनः इसमें कमी कर दी गई।
- सर्वाधिक तिहरा शोषण मारवाड रियासत में हुआ था।
- मारवाड़ रियासत में कुल राजपूताना का 26% भाग शामिल था।
- मारवाड रियासत की कुल भूमि का 13% खालसा भूमि व 87% जागीर भूमि थी।
- आंदोलन का कारण अत्यधिक कर व लाग बाग।
- नेतृत्व कर्ता – जयनारायण व्यास
- जयनारायण व्यास ने 1923 में मरूधर हितकारिणी सभा का पुनर्गठन किया और नाम बदलकर मारवाड हितकारिणी सभा रखा।
- 1938 में कृषक सुधारक मंच की स्थापना की गई।
- 1941 में बलदेव राम मिर्धा की अध्यक्षता में मारवाड किसान संघ की स्थापना की।
- 5 मार्च, 1932 को मारवाड़ हितकारिणी सभा व मारवाड़ यूथ लीग को असंवैधानिक संगठन घोषित कर दिया।
- छगनराज चौपासनीवाला व अचलेश्वर प्रसाद शर्मा को गिरफ्तार कर क्रमशः शेरगढ़ व दौलतपुरा के किले में नजरबंद कर दिया गया।
- **चंडावल काण्ड** – 28 मार्च, 1942 को पूरे मारवाड़ में उत्तरदायी शासन दिवस मनाने का निर्णय लिया। लेकिन चंडावल ठाकुर ने इसकी अनुमति नही दी। इसके बावजूद लोक परिषद् के कार्यकर्ता चंडावल पहुँचे जिन पर आक्रमण कर दिया गया।
- 14 फरवरी, 1948 को The Direct Management of Jagir Estates Act 1949 बनाकर जागीरदारों से लगान वसूली शक्तियाँ छीन ली गई।

डाबडा हत्याकाण्ड – (13 मार्च, 1947)

- इस हत्याकाण्ड में 12 व्यक्ति मारे गये। डीडवाना के ठाकुर द्वारा यह अत्याचार किया गया।
- मथुरादास माथुर के नेतृत्व में प्रजामण्डल और किसान आंदोलन के कार्यकर्ता यहाँ एकत्रित हुए थे।

शेखावाटी किसान आंदोलन (1922–1947)

- शेखावाटी किसान आंदोलन सीकर जिले से प्रारम्भ हुआ। यह आंदोलन पंच पानों में फैला था।
- **पंच पाने** – डूंडलोद, नवलगढ, बिसाऊ, अलसीसर और मंडावा।
- आंदोलन का प्रमुख कारण अत्यधिक कर व लाग बाग – बेगार।

- **नेतृत्वकर्ता** – रामनारायण चौधरी
- सीकर के तात्कालीन ठाकुर कल्याण सिंह ने भूमि कर में 1.5 गुणा की वृद्धि की।
- शेखावाटी में बेगार व्यवस्था का किसानों ने सर्वाधिक विरोध किया।
- 1921 में चिडावा सेवा समिति की स्थापना की गई।
- चौधरी हरलाल सिंह ने सीकर क्षेत्र में किसान पंचायतों का गठन किया।
- प्यारे लाल गुप्ता ने चिडावा में रहते हुए गाँधीवादी पद्धति से जनजागरण किया। अतः इन्हें चिडावा का गाँधी कहा जाता है।
- इन्होनें चिडावा में श्री कृष्ण पुस्तकालय की स्थापना की।
- भरतपुर के शासक बृजेन्द्र सिंह के छोटे भाई देशराज ने 1931 में राजस्थान जाट महासभा की स्थापना की व शेखावाटी में जनजागरण किया।
- देशराज के प्रयासो से 1934 में सीकर के अलावा पलसाना नामक स्थान पर जाट प्रजापति महायज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें 3.50 लाख से अधिक लोगों ने भाग लिया।
- किशोरी देवी के नेतृत्व में सीकर के कटराथल नामक स्थान पर 25 अप्रैल, 1934 को विशाल महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें 10 हजार से अधिक महिलाओं ने भाग लिया।

जयसिंहपुरा हत्याकाण्ड (21 जून, 1934) – यह हत्याकांड ईश्वरी सिंह द्वारा करवाया गया। अतः इस पर जयपुर रियासत में मुकदमा चला। जेल की सजा हुई। रिंकू राम ने गवाही दी।

- ऐसा प्रथम बार हुआ जब किसान आंदोलन के दौरान अत्याचारी को सजा हुई हो।
- अगस्त 1934 में अंग्रेज अधिकारी w.t वैब की अध्यक्षता से समझौता हुआ तथा बेगार को समाप्त करने और भूमि कर कम करने की घोषणा हुई। इसका पालन किया गया।
- कूदन गाँव और खुंडी गाँव में किसानों की सभाएँ हुई। जहाँ अप्रैल 1935 में हत्याकाण्ड किये गये।
- कूदन गाँव हत्याकाण्ड की चर्चा ब्रिटेन के हाऊस ऑफ कॉमन्स में लोरेन्स नामक अंग्रेज द्वारा की गई।
- कूदन हत्याकाण्ड – 25 अप्रैल, 1935 को हुआ।
- किसानों से लगान वसूली करने हेतु मलिक मोहम्मद हुसैन के नेतृत्व में भेजा गया।
- खुड़ी गाँव नरसंहार की आलोचना खण्डवा से प्रकाशित 'कर्मवीर' मे तथा गाँधी जी के 'हरिजन' समाचार पत्रों में की गई।
- 26 मई, 1935 सीकर दिवस मनाने का निश्चय किया।
- प्रजामण्डल ने 1940 ई. में किसानों की समस्याओं पर विचार करने के लिए चार सदस्यों की एक समिति गठित की। जिसके सदस्य हीरालाल शास्त्री, टीकाराम पालीवाल, सरदार हरलाल सिंह और विद्याधर कुलहरी थे। इन्होनें 25 मार्च, 1941 को प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जिसे राज्य के भूमि सुधारों के इतिहास में मैग्नाकार्टा कहा जा सकता है।
- इस हत्याकाण्ड में निम्नलिखित व्यक्ति शहीद हुए।
  - चेतराम
  - रिंकूराम
  - तुलछाराम
  - आशाराम
- इस आंदोलन के दौरान जमनालाज बजाज ने ग्रामीण क्षेत्रों में घूमकर जनजागरण किया।
- नरोत्तम लाल जोशी ने शेखावाटी में "जकात आंदोलन" चलाया।
- हीरालाल शास्त्री के प्रयासों से 1946 में किसानों को बेगार व करों में राहत दी गई और यह आंदोलन समाप्त हुआ।

जाट किसान आंदोलन (1880) – यह आंदोलन मेवाड क्षेत्र में किया गया जो राजस्थान का प्रथम किसान आंदोलन था जो मातृकुण्डिया से शुरू हुआ। सामन्ती अत्याचार के विरूद्ध था।

भू–राजस्व पद्धतियाँ

1. **काँकड कूँत पद्धति –** इसमें खडी फसल पर उत्पादन के अनुमान के आधार पर भूमि कर की वसूली की जाती थी।
2. **डोरी पद्धति –** भूमि को डोरी से मापकर प्रति बीघा, भूमि कर, निर्धारण और वसूली।
3. **बँटाई पद्धति –** यह तीन प्रकार की थी –
   - **खेत बँटाई –** खडी फसल के आधार पर बँटाई करना।
   - **लाग बँटाई –** कटी हुई फसल के बंडलों की गिनती के आधार पर कर निर्धारण करना।
   - **रास बँटाई –** अन्न के ढेर के आधार पर बँटाई करना।
4. **मुकाता पद्धति –** इसमें सम्पूर्ण गाँव का भूमि कर गाँव के चौधरी द्वारा वसूल किया जाता था तथा चौधरी से ठाकुर द्वारा भूमि कर की वसूली की जाती थी।
5. **बीघोड़ी –** इसमें प्रति बीघा भूमि कर का निर्धारण होता था।

कर व लाग बाग

ग्रह कर – विभिन्न रियासतों में इसे अलग–अलग नामों से जाना जाता है:–

1. जयपुर – घर की बिछोती
2. जोधपुर – घर गिनती किवाड
3. मेवाड – घर बराड
4. बीकानेर – धुआँ बाछ

जलावन लकडी पर कर

1. जयपुर – दरखत की बिछोती
2. जोधपुर – कबाडा बाब
3. उदयपुर – खड, लाकड
4. बीकानेर – काठ

आयात – निर्यात कर

1. जयपुर – सायरकर
2. जोधपुर – सायरकर
3. उदयपुर – मापा बारूता
4. बीकानेर – जकात
5. जैसलमेर – दाण

जल कर

1. आबियाणा – सिंचाई कर।
2. खडसीसर – तालाबों से पीने के पानी पर कर।

- **अखराई कर –** जमा राशि की रसीद प्राप्ति हेतु
- **गनीम बराड़ –** मेवाड में युद्ध कर।
- **जावामाल/सिंगोटी –** मवेशियों के क्रय–विक्रय पर कर।
- **खूँटा बँधी –** प्रति ऊँट ली जाने वाली राशि ।
- **खूँटा फिराई –** ऊँट के अलावा अन्य पशुओं पर कर।
- **घासमरी –** बडें पशुओं के सार्वजनिक भूमि पर चराई कर।
- **पानचराई –** छोटे पशुओं के सार्वजनिक भूमि पर चराई कर।
- **जमी चौथ –** भूमि के क्रय–विक्रय पर कर।

- **हीद भराई** – मालियों से ली जाने वाली राशि।
- **ईच** – मालणियों से लिया जाने वाला कर।
- **काँसा परोसा** – सामान्य वर्ग द्वारा मंगल कार्य के अवसर पर ठाकुर को दिया जाने वाला भोजन या राशि।
- **खोळा** – संतान गोद लेने पर लगने वाला कर।
- **किणा** – वस्तु विनिमय पर लगाया गया कर।
- **चँवरी कर** – शादी पर लिया जाने वाला कर।
- **तलवार बँधाई कर** – अन्य नाम, पेशकशी, नजराना, केंद्र खालसा।
- **कमठा लाग** – भवन निर्माण हेतु प्रति घर ली जाने वाली राशि।
- **पावणा पावरा लाग** – ठाकुर के घर आये अतिथि के सत्कार हेतु ली जाने वाली राशि।

राजस्थान में जनजातीय आन्दोलन

भगत आन्दोलन – गुरू गोविन्द गिरी।

- राजस्थान के डूँगरपुर व बाँसवाड़ा में भील जनजाति में सामाजिक जागृति उत्पन्न करने व भीलों को एकत्रित करने हेतु चलाया गया आन्दोलन।
- गुरू गोविन्द गिरी का जन्म 20 दिसम्बर, 1858 को डूँगरपुर के बाँसियाँ गाँव के एक बंजारा परिवार में हुआ।
- गुरू गोविन्द गिरी ने 1883 ई. मानगढ़ पहाड़ी (बाँसवाड़ा) पर सम्प सभा की स्थापना की।

[2nd Grade 1st Paper – 2016, 2018]

- 17 नवम्बर, 1913 को (मार्ग शीर्ष पूर्णिमा) मानगढ़ पहाड़ी पर एकत्रित भीलों पर कर्नल शटन के आदेश पर गोलियाँ चला दी जिसमें 1500 भील मारे गये।
- पुन्जा धीर आत्मसमर्पण करने वाला पहला व्यक्ति था तथा गुरू गोविन्द गिरी को आत्म समर्पण के लिए कहा था।
- पुन्जा धीर को संतरामपुर व गुरू गोविन्द गिरी को अहमदाबाद की साबरमती जेल में रखा गया।
- मानगढ़ हत्याकाण्ड को राजस्थान में 'जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड' के नाम से जाना जाता है।
- अतिरिक्त सेशन जज फ्रेडरिक विलियम एलीसन व राजपूताना के मेजर ह्यूज ऑगस्टन केम्पेल गफ को ट्रिब्यूनल का सदस्य मनोनीत किया। इस ट्रिब्यूनल ने गुरू गोविन्द गिरी को मृत्युदण्ड तथा पुन्जा धीर को आजीवन कारावास की सजा सुनायी।
- 1914 को आर.पी. बारो (कमिश्नर) ने गोविन्द गिरी की सजा को कम करते हुए 10 वर्ष की कठोर सजा में बदल दिया।
- 12 जुलाई, 1923 को रिहा कर दिया। इसके बाद गुरू गोविन्द गिरी पंचमहल जिले के झालोद तालुका के कम्बोइ गाँव में जीवन व्यतीत किया। 30 अक्टूबर, 1931 को उनका देहान्त हो गया।

एकी आंदोलन

- मोतीलाल तेजावत द्वारा भील क्षेत्र 'भोमट' में 1921 में चलाया गया।
- इस आन्दोलन का श्री गणेश झाड़ोल व फलासिया गाँवों में किया गया।
- मोतीलाल तेजावत का जन्म 1886 ई. में कोलियारी गाँव में हुआ।
- इस आन्दोलन की शुरूआत चित्तौड़गढ़ के मातृ कुण्डिया स्थान से की गयी।
- 1921 में नीमड़ा गाँव में मोतीलाल तेजावत के नेतृत्व में भील इकट्ठे हुए। जिस पर मेवाड़ भील कोर के सैनिको ने अन्धाधुन्ध फायरिंग कर दी।
- नीमड़ा हत्याकाण्ड को दूसरा जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड कहा जाता हैं।

- 3 जून, 1929 को ईडर राज्य की पुलिस ने खेडब्रह्म नामक गाँव में तेजावत को गिरफ्तार कर लिया व उदयपुर जेल में रखा गया।
- एकी आंदोलन मे सैनिको द्वारा, यह हत्याकाण्ड किया गया। जिसमें 1200 भील शहीद हुए।
- इस हत्याकाण्ड की जाँच हेतु मणिलाल कोठारी को भेजा गया।
- तेजावत द्वारा मेवाड की पुकार नामक पत्र, मेवाड सरकार को दिया गया। जिसमें अधिकांश माँगों को मान लिया था।
- तेजावत ने नारा दिया **न हाकिम और न हुकुम।**
- गाँधी जी के आग्रह से मोतीलाल तेजावत ने आत्मसमर्पण किया। इन्हें 7 वर्ष की सजा दी गई।

मीणा आंदोलन

- **मुख्य कारण** – क्रिमिनल ट्राइब्स एक्ट 1924
- इस अधिनियम के अनुसार मीणा जाति को जरायम पेशा कोम (अपराधी जाति) घोषित कर दिया गया तथा 14 वर्ष व इससे ऊपर आयु के प्रत्येक मीणा व्यक्ति को निकटवर्ती थाने मे दैनिक हाजरी देना अनिवार्य कर दिया गया।
- 1930 में जयपुर रियासत में इस अधिनियम को कठोरता से लागू किया गया।
- 1933 में मीणा क्षेत्रिय सभा का गठन किया गया। परन्तु उल्लेखनीय कार्य नहीं हुआ।
- 1944 में नीमकाथाना नामक स्थान पर जैन मुनि मगन सागर के नेतृत्व में विशाल मीणा सम्मेलन आयोजित किया गया।
- इसी सम्मेलन के दौरान जयपुर राज्य मीणा क्षेत्रीय सुधार समिति का गठन किया गया। अध्यक्ष – पण्डित बंशीधर शर्मा थे।
- दिसम्बर, 1945 में उदयपुर के सालाठिया मैदान में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् का वार्षिक अधिवेशन हुआ। जिसमें 435 नेताओं ने भाग लिया । अध्यक्षता – पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने की।
- इसी अधिवेशन में पण्डित बंशीधर शर्मा द्वारा मीणा जाति का विषय उठाया गया।
- पण्डित जवाहर लाल नेहरू और ठक्कर बप्पा के प्रयासों से फरवरी 1946 में मीणाओं को दैनिक हाजरी से मुक्ति दे दी गई।
- 30 मार्च, 1949 को जयपुर रियासत के विलय के बाद मीणाओं को अन्तिम रूप से राहत प्राप्त हुआ।

5- राजस्थान में राजनीतिक जनजागरण

राजस्थान में राजनीतिक जनजागरण की शुरूआत सर्वप्रथम महात्मा गाँधी ने अगस्त, 1942 ई. में अंग्रेजो भारत छोडो के देश व्यापी आंदोलन से माना जा सकता है। इसमें देशी राजाओं को अंग्रेजो से नाता तोडने का आह्वान किया गया। राजस्थान में अनेक स्थानों पर तीव्र क्रांति की लहर चली जिसमें कई क्षेत्रों में आंदोलन का काफी उग्र रूप देखने में आया, जिसमें कोटा का आंदोलन अपनी अलग रोद्रता के लिए जाना जाता है। जिनका नेतृत्व नाथूलाल, बैणीमाधव शर्मा की अहम भूमिका थी।

जेन्टलमैन एग्रीमेंट

- जयपुर प्रजामण्डल के अध्यक्ष हीरालाल शास्त्री व जयपुर के तत्कालीन प्रधानमंत्री सर मिर्जा इस्माइल के मध्य सितम्बर, 1942 ई. में एक समझौता हुआ, जिसे जेन्टलमैन एग्रीमेंट कहा जाता है। इसमें यह कहा गया था कि राज्य सरकार अंग्रेजो को भविष्य में युद्ध के लिए मदद नहीं करेगी और राज्य में उत्तरदायी शासन की तुरन्त स्थापना करें।
- इस प्रकार यह समझौता भारत छोड़ो आंदोलन की मूल भावना के विपरीत था। इस समझौते के कारण शास्त्री जी ने जयपुर महाराजा के विरूद्ध प्रजामण्डल द्वारा संघर्ष छेड़ने का विचार त्याग दिया।

आजाद मोर्चा

जयपुर प्रजामण्डल द्वारा भारत छोडो आंदोलन में भाग नहीं लेने में कुछ कार्यकर्ताओं को यह रूखापन बहुत खला और उन्होंने अलग आजाद मोर्चे का गठन किया और जयपुर में इस मोर्चे द्वारा आन्दोलन को तेज किया।

आजाद मोर्चे के प्रमुख व्यक्तित्व

1. दौलतराम भण्डारी
2. बाबा हरिशचन्द्र
3. चिरंजी लाल मिश्र
4. रामकरण जोशी

चरखा संघ

जमनालाल बजाज ने जयपुर में 1942 ई. को देश में स्वदेशी अपनाने व स्वावलम्बन की भावना लोगों में भरने के लिए चरखा संघ की स्थापना की थी।

- चरखा संघ का नेतृत्व श्री बी.एस देशापाण्डे कर रहे थे।
- 1945 ई. में आजाद मोर्चे का विलय जयपुर प्रजामण्डल में कर दिया।
- अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् का छठा अधिवेशन 31 दिसम्बर, 1945 ई. व 1 जनवरी, 1946 ई. को जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में उदयपुर में सम्पन्न हुआ। जिसमें माणिक्यलाल वर्मा की अहम भूमिका थी।
- इस अधिवेशन में रियासतों के शासकों से अपील की गई कि देश में परिवर्तित परिस्थति को देखते हुए अपने राज्यों में उत्तरदायी शासन की स्थापना करें।
- हीरालाल शास्त्री के नेतृत्व में जयपुर रियासत में 1948 ई. को उत्तरदायी शासन की स्थापना हुई।
- जोधपुर में भी 1948 ई. को मंत्रिमण्डल का गठन हुआ, जिसके प्रधानमंत्री जयनारायण व्यास चुनें।

महत्वपूर्ण रियासतों में उत्तरदायी शासन की स्थापना

रियासत	स्थापना	प्रधानमंत्री या प्रमुख नेता
1. शाहपुरा	14 अगस्त, 1947	गोकुल लाल असावा
2. झालावाड	1947	हरिशचन्द्र (प्रधानमंत्री)
3. डूँगरपुर	जनवरी, 1948	गौरीशंकर उपाध्याय (मुख्यमंत्री)
4. बाँसवाडा	फरवरी, 1948	भूपेन्द्र सिंह त्रिवेदी (मुख्यमंत्री)

नोट– जैसलमेर एक ऐसी रियासत थी जहाँ न तो उत्तरदायी शासन की स्थापना हुई व न ही भारत छोडो आंदोलन में भाग लिया।

जन आंदोलन की गतिविधियाँ

चूरू के धर्मस्तूप पर चन्दनमल बहड़ स्वामी गोपालदास ने अपने साथियों के साथ 26 जनवरी 1930 को तिरंगा झण्डा फहराया था।

नीमेज हत्याकाण्ड

बिहार के आरा जिले में एक धनाढ्य महन्त से धन प्राप्त करने हेतु अर्जुनलाल सेठी ने अपने साथी जयचन्द, मोतीचन्द व अन्य के साथ मिलकर महन्त की हत्या कर दी, जिससे अर्जुनलाल सेठी को गिरफ्तार कर जेल भेजा दिया व मोतीचन्द को मृत्युदण्ड मिला।

बीकानेर षड्यंत्र

बीकानेर के महाराजा गंगासिंह जब 1931 ई. में गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए लंदन गए। तब चन्दनमल, सत्यनारायण, गोपालदास स्वामी ने बीकानेर की वास्तविक स्थिति को चित्रित करती एक पुस्तिका **(बीकानेर एक दिग्दर्शन)** सभी को वितरित करवा दी जिससे गंगासिंह का बहुत अपमान हुआ। अन्ततः सभी पुस्तिका वितरित मण्डल पर झूठा मुकदमा दर्ज कर अमानवीय व्यवहार किया गया जिसे बीकानेर षड्यंत्र अभियोग के नाम से जाना जाता है।

शुद्धि आन्दोलन

भरतपुर में **कृष्ण सिंह** के संरक्षण में चलाया गया आंदोलन, जिसमें ठाकुर देशराज, सांवतमल, रेवतीशरण शर्मा का अहम योगदान था। जिसमें राजा कृष्ण सिंह को गद्दी से अपदस्थ कर अंग्रेज अधिकारी डंकन मैकजी को राज्य का प्रशासक बना दिया।

हॉर्डिंग बमकाण्ड

गवर्नर जनरल हॉर्डिंग के जुलूस पर **23 दिसम्बर, 1912** को दिल्ली के चाँदनी चौक में स्थित पंजाब नेशनल बैंक की इमारत में जोरावरसिंह बारहठ, प्रतापसिंह बारहठ, अर्जुनलाल सेठी ने मिलकर बम फेंका था, जिसमें हॉर्डिंग तो बच गए पर उनका सारथी मारा गया। **सेठी को** गिरफ्तार कर **वैलूर जेल भेज** दिया।

मेयो कॉलेज बम काण्ड

1934 ई. में लॉर्ड विलिंगडन (वायसराय) की अजमेर यात्रा के दौरान उनकी हत्या करने की योजना ज्वाला प्रसाद व फतेहचन्द ने बनाई पर पुलिस को इस योजना की पहले सूचना मिल जाने पर यह योजना कामयाब नहीं हो सकी।

डोगरा काण्ड

अजमेर के पुलिस अधिकारी पी.एन. डोगरा की हत्या करने की योजना ज्वालाप्रसाद शर्मा व अन्य साथियों ने मिलकर बनाई। इस योजना को अंजाम देते समय 4 अप्रैल, 1935 ई. को डोगरा तो बच गए, लेकिन उनका साथी सलालुद्दीन मारा गया।

पूनावाडा काण्ड

मई, 1947 में डूँगरपूर के पूनावाडा ग्राम की पाठशाला को लेकर निंदनीय काण्ड, जिसमें पाठशाला के भवन को गिरा दिया गया व अध्यापक श्री शिवराम भील को बेरहमी से पीटा।

रास्तापाल हत्याकांड

19 जून, 1947 को डूँगरपुर के रास्तापाल ग्राम की पाठशाला से जुडा मामला, जिसमें रियासती सैनिकों ने पाठशाला को बंद नहीं करने पर संरक्षक नानाभाई खांट को मौत के घाट उतार दिया व अध्यापक सेंगाभाई को ट्रक के पीछे बाँधकर घसीटने लगे तब पाठशाला की एक 13 वर्षीय बाला कालीबाई द्वारा सेंगाभाई की

ट्रक से बँधी रस्सी काटने के कारण सैनिकों ने कालीबाई पर गोलियाँ चला दी, जिसके कारण 21 जून, 1947 को वीर बाला की मृत्यु हो गई। गेब सागर झील के किनारे गुरू–शिष्या (नानाभाई खांट व कालीबाई) की मूर्तियाँ स्थित है।

स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान प्रकाशित पत्र

पत्र का नाम	स्थान	संस्थापक	विशेषता
प्रताप	कानपुर	गणेश शंकर विद्यार्थी	यह एक साप्ताहिक पत्र था, जिसने बिजौलिया किसान आंदोलन में अहम भूमिका निभाई थी।
राजस्थान समाचार	अजमेर (1889 ई.)	मुंशी समर्थदान	प्रथम हिन्दी दैनिक समाचार पत्र
राजस्थान केसरी	वर्धा (1920 ई.)	सर्वप्रथम निकाला – विजय सिंह पथिक संस्थापक – रामनारायण चौधरी	• राजनीतिक साप्ताहिक समाचार पत्र था। • वित्तीय सहायता – जमनालाल बजाज द्वारा
नवीन राजस्थान व तरूण राजस्थान	अजमेर (1921 ई.) तथा (1923 ई.)	विजय सिंह पथिक	पथिक जी ने नवीन राजस्थान पत्र का नाम बदलकर तरूण राजस्थान कर दिया। इस पत्र की स्थापना– पथिक, सोहनलाल गुप्ता, रामनारायण चौधरी, जयनारायण व्यास ने की।
नव ज्योति	अजमेर (1936 ई.)	रामनारायण चौधरी, दुर्गाप्रसाद चौधरी	साप्ताहिक पत्र, 1948 ई. में यह पत्र दैनिक समाचार पत्र के रूप में प्रकाशित होने लगा।
प्रजासेवक	जोधपुर	अंचलेश्वर प्रसाद	साप्ताहिक समाचार पत्र
अखण्ड भारत	बम्बई	जयनारायण व्यास	
आगी बाण	ब्यावर	जयनारायण व्यास	राजस्थानी भाषा का प्रथम राजनीतिक समाचार पत्र तथा मारवाड में जनजागृति लाने में अहम भूमिका थी।
राजपूताना गजट	अजमेर (1885 ई.)	मुराद अली "बीमार"	
सज्जन कीर्ति सुधाकर	मेवाड (1876 ई.)	महाराणा सज्जन सिंह	
राजस्थान	ब्यावर (1923 ई.)	ऋषिदत्त मेहता	हाडौती क्षेत्र में राजनीतिक जनजागृति फैलाने में अहम योगदान
जयभूमि	जयपुर (1940 ई.)	गुलाबचन्द	
लोकवाणी	जयपुर (1943 ई.)	देवीशंकर तिवारी	यह स्व. जमनालाल बजाज की स्मृति में शुरू किया गया साप्ताहिक समाचार पत्र है।
राजस्थान टाइम्स	अजमेर (1885 ई.)	वासुदेव शर्मा	अंगेजी में प्रकाशित होने वाला पत्र
जयपुर समाचार	जयपुर (1942 ई.)	श्यामलाल वर्मा	दैनिक समाचार पत्र
त्याग भूमि	अजमेर (1927 ई.)	हरि भाऊ उपाध्याय	
देश हितैषी	अजमेर (1882 ई.)	मुंशी मुन्नालाल	मासिक पत्र
साप्ताहिक राजस्थान	ब्यावर (1923 ई.)	ऋषि दत्त मेहता	
सारम	झालावाड (1921 ई.)	राम निवास शर्मा	

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान गठित संस्थाएँ

संस्था	स्थापना	संस्थापक	विशेषताएँ
सर्व हितकारिणी सभा	बीकानेर (1907 ई.)	कन्हैयालाल ढूँढ स्वामी गोपालदास	
मारवाड हितकारिणी सभा	मारवाड (1918 ई.)	चाँदमल सुराणा	यह संस्था ज्यादा प्रभावशाली नहीं रही अतः 1921 ई. में इस सभा को पुण्य नया रूप दिया गया।
मारवाड सेवा संघ	जोधपुर (1920 ई.)	जयनारायण व्यास व अन्य	
नगरी प्रचारिणी सभा	धौलपुर (1934 ई.)	ज्वालाप्रसाद जिज्ञासू, जौहरीलाल इन्दू	इस सभा ने मातृभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में अहम भूमिका निभाई थी।
हिन्दी साहित्य समिति	भरतपुर (1912 ई.)	जगन्नाथ दास	
राजस्थान सेवा संघ	वर्धा (1919 ई.)	विजयसिंह पथिक, अर्जुनलाल सेठी, केसरी सिंह बारहठ, रामनारायण हरिभाई किंकर	1920 में इस संस्था को अजमेर स्थानांतरित किया गया।
राजपुताना मध्य भारत सभा	1918 ई.	जमनालाल बजाज	देशी राज्यों में राजनैतिक चेतना उत्पन्न करने व उत्तरदायी सरकार की स्थापना करने के उद्देश्य से स्थापित की गई संस्था थी।
अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद्	मुम्बई (1927 ई.)	देशी रियासतों के राजाओ के निर्देशन में	देशी राज्यों में उत्तरदायी शासन स्थापित करने हेतु बनी संस्था प्रथम अधिवेशन – 17 दिसम्बर,1927 को बम्बई अध्यक्ष – रामचन्द्र राव मुख्य कार्यालय – बम्बई
वीर भारत सभा	1910 ई.	केसरी सिंह बारहठ, गोपाल दास बैरवा	
वीर भारत समाज	1910 ई.	विजय सिंह पथिक, केसरी सिंह बारहठ, गोपाल सिंह खैरवा	
विद्या प्रचारिणी सभा		हरि भाई किंकर	
सम्प सभा	1883 ई.	गुरू गोविंद सिंह	
उपरमाल पंचबोर्ड	1917 ई.	विजय सिंह पंथिक	
वर्धमान विद्यालय	जयपुर 1907 ई.	अर्जुनलाल सेठी	इस संस्था में विभिन्न विषयों के अध्ययन के साथ–साथ छात्रों के अक्ष पटल पर राष्ट्रीय भावना का समावेश किया जाता था।
सर्व सेवा संघ		सिद्धराज ढढ्ढा	
वागड सेवा मंदिर	डूँगरपुर 1935 ई.	गौरीशंकर उपाध्याय भोगीलाल पण्ड्या	यह संस्था माणिक्यलाल वर्मा के परामर्श से शुरू की, जिसने आदिवासी भीलों, हरिजनों व पिछडे लोगो में शिक्षा प्रसार व समाज सुधार का कार्य किया।